English

setuu अध्याय 17

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

देवत्व प्राप्ति : चिरंजीवी हनुमान जी ने सुनाई देवी रेणुका (येल्लामा) की पूर्ण कथा

जब यजमान क्षणक के अर्पण की प्रक्रिया संपन्न हुई , हनुमान जी बोले – "हे क्षणक , जिस समर्पण से आपने अपने अनिपटे कर्मों को मेरे हवाले किया है , उससे मैं प्रसन्न हूँ | बोलो, प्रसाद में क्या इच्छा रखते हो?"

क्षणक का उत्तर अन्य मातांगो से भिन्न नहीं था | वह बोला – "हे प्रभु , मुझे उस परम ज्ञान की इच्छा है जो आत्मा को मुक्तिसागर की ओर ले जाकर मुक्ति दिलाता है |"

हनुमान जी बोले – "हे मातांगो , कलियुग में हर आत्मा एक देह से बंधी होती है | हर आत्मा के पास एक देह है जिसे वह अपना मानती है | देह के अलावा भी कुछ अन्य चीजें हैं जिसे आत्मा अपना कहती है – जैसे 'मेरी जमीन', 'मेरा परिवार', 'मेरी सम्पति' आदि आदि |

"सतयुग में ऐसा कोई स्वामित्व नहीं होता था | सब कुछ हर किसी का था , देह भी | जैसे अगर किसी आत्मा की महिला देह धारण करने की इच्छा होती तो वह उपलब्ध महिला देहो में से किसी एक को धारण कर लेती | जब वह इच्छा पूरी हो जाती तो अपनी नई इच्छा के अनुसार आत्मा किसी अन्य देह को धारण कर लेती |

"सतयुग का अंत इसी लिए हुआ क्योंकि आत्माओं ने देहो पर स्वामित्व जताना शुरू कर दिया | एक वेना नामक आत्मा थी | उसने सबसे रूपवान देह धारण कर रखी थी | लगाव के कारण उसने कई वर्षों तक उस देह को नहीं छोड़ा | ऋषि वेना के पास आये और बोले – "हे वेना , अगर आपकी सबसे रूपवान देह को धारण करने की इच्छा पूर्ण हो गई हो तो कृपा इस देह को छोड़ दो ताकि जो अन्य आत्माएं इस देह को धारण करने का इन्तजार कर रही हैं , कर सकें |"

"वेना ने उत्तर दिया – "हे सम्माननीय ऋषिगण , मेरी इच्छा अभी पूर्ण नहीं हुई है | मैं सदा के लिए इस देह को धारण किये रखने की इच्छा रखता हूँ |

"ऋषियों ने पुछा – "... और तुम्हे ऐसा क्यों लगता है कि यह सबसे रूपवान देह है?"

"वेना का उस देह से लगाव तोड़ने के लिए ऋषियों ने इंद्र देव से आग्रह किया कि वे वेना ने जो देह धारण कर रखी थी उससे भी रूपवान देह बनाएं | इंद्र देव जो अस्तित्व के द्रव का प्रयोग करके कुछ भी बना सकते हैं , ने ऋषियों की इच्छानुसार एक रूपवान देह बना दी |

“वेना की आत्मा अब उस नई देह में प्रवेश कर गई | इंद्र देव एक से एक बढ़कर रूपवान देह बनाते गए और वेना की आत्मा सबसे रूपवान देह को धारण करती गई | लगाव नहीं टूटा | वेना भ्रम से बाहर नहीं आया |

“हे मातंगो , सतयुग में हर देह के साथ अलग अलग सुख जुड़े हुए थे | आत्माओं का किसी एक देह के लिए लड़ाई करने का कोई कारण नहीं था | लेकिन जब वेना एक ही देह में घुसा रहा तो अन्य आत्माओं ने सोचा कि उस देह में जो सुख मिलता है अर्थात सबसे रूपवान होने का सुख, वह सुख अन्य सुखों से बेहतर है | बहुत सारी आत्माएं उस सबसे रूपवान देह के प्रति जिज्ञासु हो गई | असुरों को मानवलोक में आने का अवसर मिल गया और उन्होंने जिज्ञासा को लड़ाई में बदलना शुरू कर दिया |

“सबसे रूपवान देह के स्वामित्व के लिए लड़ाई छिड़ गई जिसके चलते उस देह को चोट आ गई | सतयुग में चोट अपने आप तुरंत ठीक हो जाया करती थी | किन्तु उस देह की चोट ठीक नहीं हुई | भगवन इंद्र ऋषियों के सामने उपस्थित हुए और बोले – “मैं इस देह को ठीक नहीं कर सकता क्योंकि इसे वेना ने धारण कर रखा है और वेना के कर्म अब पवित्र नहीं रहे | अगर कोई पवित्र आत्मा इस देह को धारण करे तो मैं इसकी चोट ठीक कर सकता हूँ |”

“सतयुग में जब भी इच्छा प्रकट की जाती , तुरन्त पूरी हो जाती थी क्योंकि कर्म की आवश्यकता की समस्या नहीं थी | उस रूपवान देह के स्वामित्व को लेकर छिड़ी लड़ाई उन पहले वाकयों में से एक थी जहाँ कर्म और इच्छा का असंतुलन देखा गया | सबसे रूपवान देह ठीक नहीं हुई और अंततः मर गई | यह इस कल्प की पहली मौतों में से एक मौत थी | सतयुग समाप्त हो रहा था | मानवलोक त्रेता युग में प्रवेश कर रहा था |

“जब कुछ टूटता है तो बहुत तेजी से टूटता है | ऋषियों और देवो को यह डर था कि सतयुग की वो लड़ाई बहुत तेजी से बढ़ेगी और संसार का अंत बाकी युगों के बीतने से पहले ही हो जाएगा | संसार को बचाने के लिए नियंत्रण और संतुलन की प्रणाली विकसित की जानी आवश्यक थी |

“ऋषियों और देवो ने निर्णय लिया कि मानव लोक के जीवो को तीन वर्गों में विभाजित किया जाए – (1) ऋषि (2) पृथु (3) निषाद | वे ज्ञानी आत्माएं जो देवो के सहायक बनने योग्य थी उन्हें ऋषि कहा गया | वे आत्माएं जो कुछ हद तक भ्रम में फंसी हुई थी उन्हें पृथु कहा गया | और वे आत्माएं जो काल-अस्तित्व के जाल में पूर्णतया फंसी हुई थी उनके निषाद कहा गया | निषादों में पशु भी शामिल थे |

“ऋषियों का कर्त्तव्य था कि वे पृथु वर्ग को ऋषियों के स्तर तक लाने का प्रयास करें और उनके निषाद वर्ग के स्तर पर गिरने से बचाएं | पृथु वर्ग का कर्तव्य था कि वे निषाद वर्ग को पृथु स्तर तक उठाने का प्रयास करें |

“ऋषि पृथु वर्ग की आत्माओं को ज्ञानवान करने के लिए उन्हें परमज्ञान प्राप्ति में सहायता करते थे | अतः ऋषि और पृथु वर्ग का रिश्ता गुरु-शिष्य का रिश्ता था | गुरु-शिष्य के रिश्ते में समर्पण सबसे पहली आवश्यकता होती है | विवाह में भी पति-पत्नी एक दुसरे को समर्पित होते हैं | यह निर्णय लिया गया कि ऋषि लोग पृथु लोगों से विवाह करेंगे ताकि विवाह पृथु जीवनसाथी के उत्थान का निमित बन जाए |

“उदाहरण के तौर पर , ऋषि जमदग्नि ने रेणुका नामक एक राजकुमारी से विवाह किया जो कि पृथु थी | जब देवी रेणुका ऋषि जमदग्नि को समर्पित हो गई , उन्होंने उसको परमज्ञान देना प्रारंभ कर दिया ताकि वह ऋषि स्तर तक उठ सके |

“उसको सुर-असुर, कर्म-इच्छा , काल-अस्तित्व आदि का ज्ञान देने के पश्चात् ऋषि जमदग्नि ने उसे जीवो के तीन वर्गों के बारे में बताया | वे बोले – “देवी , सतयुग के अंत में संसार के कल्याण के लिए एक प्रणाली विकसित की गई थी जिसके तहत सभी जीवो को तीन वर्गों में बांटा गया था – (1) ऋषि (2) पृथु (3) निषाद |”

“हे मातंगो , उसे तीन वर्गों से परिचित कराने के लिए ऋषि जमदग्नि बोले – “देवी , चलो जंगल से बेर लाने चलें |”

“देवी रेणुका बोली – “स्वामी , जंगल से बेर लाने की क्या आवश्यकता है? हमारे आश्रम में वातावरण सतयुग जैसा है | यहाँ जो भी इच्छा प्रकट होती है , बिना पुरुषार्थ के तुरंत पूरी हो जाती है | इच्छा प्रकट कर दीजिये, देव इंद्र अस्तित्व के द्रव का प्रयोग करके यही पर बेर बना देंगे |”

“ऋषि जमदग्नि ने उत्तर दिया – “देवी , मेरी इच्छा बेर खाने की नहीं है | मेरी इच्छा है आपको परमज्ञान देने की | देव इंद्र ने इस उद्देश्य के लिए सभी इंतजाम कर दिए हैं | चलो बेर लाने चलें |”

“देवी रेणुका और ऋषि जमदग्नि एक बेर के पेड़ के पास गए और बेर इकठ्ठे करके एक ढेर बनाने लगे | कुछ समय बाद ऋषि जमदग्नि बोले – “देवी , चलो चलकर उद्यान में आराम करते हैं |” जाने से पहले उन्होंने एक बेर उठाया , आधा खाया और बाकी यह कहते हुए फेंक दिया – “ओह , बहुत कड़वा है|”

“वे पास के उद्यान में बैठकर आराम करने लगे | उन्हें वहां से वह बेर का ढेर दिखाई दे रहा था | उन्होंने देखा कि एक बन्दर जल्दी से ढेर के पास आया , उसने एक बेर उठाया, आधा खाया और आधा फेंक दिया | ऋषि जमदग्नि बोले – “देवी , क्या होता अगर वे बेर जहरीले होते? बन्दर ने खाने से पहले बेर को सूंघा तक नहीं | वह आया और उसने मेरी नक़ल की | उसने अपना दिमाग नहीं लगाया | उसने बेर को अपनी देह इच्छा के आवेश में खा लिया | अतः यह बन्दर एक निषाद है – आत्म ज्ञान के अनुसार जीवो का सबसे निचला वर्ग | निषाद वर्ग में भी तीन उपवर्ग हैं | और यह बन्दर सबसे निचले उपवर्ग जिसे ‘देह निषाद’ कहते हैं, उसमे आता है | कई बार मनुष्य भी देह इच्छा के आवेश में कार्य करते हैं | वे भी देह निषाद की श्रेणी में आते हैं |

“कुछ समय बाद एक गिलहरी वहां पर आई , उसने एक बेर को उठाया , उसे सूंघा और खाने लगी | ऋषि जमदग्नि बोले – देवी , गिलहरी ने अपना दिमाग लगाया | खाने से पहले उसने निर्धारित किया कि बेर खाने योग्य है या नहीं | अतः यह भी निषाद है , किन्तु देह निषाद नहीं , ‘मन निषाद’ – वे प्राणी जो मन के स्तर पर जीवन जीते हैं | कुछ मनुष्य भी ‘मन निषाद’ की श्रेणी में आते हैं क्योंकि वे निर्णय लेने के लिए केवल अपना मन इस्तेमाल करते हैं , उससे ऊपर कुछ नहीं |”

“इंद्र की योजना के अनुसार कुछ समय बाद उस बेर के ढेर के पास एक बच्चा आया | उसने इधर उधर देखा और सोचा – “बेरो को इकठ्ठा करने का पुरुषार्थ किसने किया है? क्या मुझे इसमें से कुछ बेर ले लेने चाहिए? यह उचित होगा अथवा अनुचित ? नहीं , किसी और के पुरुषार्थ से चोरी करना गलत है … लेकिन ये बेर बहुत मीठे लग रहे हैं … इतने बड़े ढेर में से मैं एक मुठ्ठी ले लूँ तो क्या फर्क पड़ने वाला है? वैसे भी ये बेर ही तो हैं , हीरे जवाहरात तो नहीं | आह , मुझे जल्दी से एक मुठ्ठी बेर लेकर यहाँ से खिसक जाना चाहिए |”

“ऋषि जमदग्नि अपनी पत्नी से बोले – “देवी , इस बच्चे ने उचित-अनुचित निर्धारित करने के लिए अपने विवेक का प्रयोग किया | विवेक बहुत ही लचकदार उपकरण है | जैसी देह-मन की इच्छा हो उसी हिसाब से विवेक तर्क ढूंढ निकलता है | बच्चे की इच्छा थी कि वह बेर खाए और उसके विवेक ने तुरंत उसी अनुसार तर्क निकाल लिए | जो मनुष्य निर्णय लेने में सबसे बड़ा उपकरण विवेक इस्तेमाल करते हैं , वे ‘विवेक निषाद’ कहलाते हैं |”

[सेतु टिपण्णी : आधुनिक समय में ज्यादातर मनुष्य ‘विवेक निषाद’ की श्रेणी में आते हैं | जो भी उनकी देह-मन की इच्छा होती है , उसी के अनुसार वे तर्क बना लेते हैं |]

“कुछ समय बाद एक ओर बच्चा आया | उसने बेरों को देखा और सोचा – “वाह , मीठे बेरों का ढेर ! काश मैं कुछ बेर इसमें से ले पाता | किन्तु मेरा संस्कार कहता है कि किसी अन्य के किये पुरुषार्थ से चोरी नहीं करनी चाहिए | इसका स्वामी आस पास नहीं है वरना मैं आग्रह करके कुछ बेर ले लेता | लेकिन चोरी करने का तो विचार भी मेरे मन में नहीं आना चाहिए |”

“ऋषि जमदग्नि ने देवी रेणुका को बताया – “देवी, इस बच्चे ने निर्णय लेने के लिए अपने संस्कारों का प्रयोग किया | अतः यह बच्चा पृथु है , निषाद नहीं | जो मनुष्य संस्कार के स्तर तक जागृत होते हैं उन्हें ‘संस्कार पृथु’ कहा जाता है |”

“कुछ समय बाद बेर के ढेर के पास से एक औरत गुजरी | उसके सिर पर इंधन की लकड़ियों का गठ्ठा था | जब उसने बेर देखे , उसने सोचा , “वाह, सुन्दर बेर ! (मैं देख सकती हूँ कि मेरी ‘देह’ इन बेरों की सुन्दरता की ओर आकर्षित है |) वे बहुत मीठे होंगे (मैं देख सकती हूँ कि मेरा ‘मन’ इन बेरो के प्रति जिज्ञासु है) | क्या मुझे इन्हें खा लेना चाहिए ? (मैं देख सकती हूँ कि मेरा ‘विवेक’ मेरे देह-मन की इच्छा के पक्ष में रास्ता निकालने की कोशिश कर रहा है) | इन बेरो को चोरी करने का विचार भी मेरे मन में नहीं आना चाहिए (मैं देख सकती हूँ कि मेरा ‘संस्कार’ सक्रिय हो गया है)|”

“वह औरत मुस्कुराई और वहां से चली गई | ऋषि जमदग्नि अपनी पत्नी से बोले – “देवी , यह औरत अपनी देह , मन , विवेक और संस्कार के प्रति चेतन थी | उसने अपने स्वयं की प्रतिक्रियाओं को किसी तीसरे व्यक्ति के नजरिये से देखा | वह उन मनुष्यों की श्रेणी में आती है जिन्हें ‘चित्त पृथु’ कहा जाता है अर्थात वे जो चेतना के स्तर तक जागृत हैं |”

कुछ समय बाद एक पुरुष वहां पर आया | वह घुटने के बल बैठ गया, उसने बेरों को नहीं छुआ | उसने धरती को छुआ वो भी ऐसे जैसे वह अपनी उँगलियों के अग्रभाग से किसी संगीत यंत्र के तार छू रहा हो | फिर उसने अपनी देह को ऐसे देखा जैसे उसे पहली बार देख रहा हो | वह एक जागृत पुरुष था – आत्मा के स्तर तक जागृत | उसके लिए सब कुछ काल-अस्तित्व का खेल था | उसके लिए बेर धरती पर नहीं रखे थे , अपितु काल के धागों पर रखे थे | ऋषि जमदग्नि ने अपनी पत्नी से कहा – “इस मनुष्य को ज्ञान है कि उसकी आत्मा काल के धागों पर बैठी है और बाकी सब कुछ – फिर चाहे वे बेर हों अथवा उसकी अपनी देह – सब अस्तित्व का द्रव है | ऐसा पुरुष ‘आत्म पृथु’ वर्ग में आता है |”

“ऋषि जमदग्नि और देवी रेणुका ने बेर के ढेर को कपडे में बांधा और वापिस आश्रम की ओर चलने लगे | देवी बोली – “स्वामी, आपने मुझे जीवो की 6 श्रेणियों के बारे में बताया – (1) देह निषाद (2) मन निषाद (3) विवेक निषाद (4) संस्कार पृथु (5) चित्त पृथु (6) आत्म पृथु | लेकिन आपने सातवी श्रेणी अर्थात ऋषि वर्ग के बारे में कुछ नहीं बताया | आप ऋषि हैं , आपको अगर रास्ते में मधुर बेरो का ढेर दिखे तो आप कैसे प्रतिक्रिया देंगे?”

“ऋषि जमदग्नि ने उत्तर दिया – “देवी , एक ऋषि की आत्मा को पहले से ही मोक्ष मिला हुआ होता है | वह कभी भी मुक्तिसागर में जा सकती है | वह इस संसार में देवो की सहायता के लिए रुकी रहती है | ऋषि का हर कार्य देवो द्वारा निर्देशित होता है | ऋषि को जो कुछ भी रास्ते में मिलेगा , उसका उद्देश्य पहले से ही मालुम होगा | अगर मुझे रास्ते में ऐसे ढेर दिखाई दे , तो मुझे पहले से ही उसका दैवीय उद्देश्य मालुम होगा | मेरी क्रिया – प्रितिक्रिया उसी दैवीय उद्धेश्य की पूर्ती के लिए होगी|”

“देवी रेणुका बोली – “स्वामी, मैं गहराई से आभार व्यक्त करती हूँ कि आपने मुझे यह ऋषि , पृथु और निषाद वर्गों का ज्ञान दिया | मैं समझ सकती हूँ कि आपने और देवों ने इस ज्ञान को देने के लिए इन बेरो का प्रयोग किया | अब जबकि मुझे ज्ञान मिल गया है , हम इन बेरों को आश्रम में क्यों ले जा रहे हैं ? खाने के लिए तो हमें ये बेर चाहिए नहीं क्योंकि हमारे आश्रम में सतयुग का वातावरण है जहाँ इच्छाएं बिना किसी पुरुषार्थ के पूर्ण हो जाती हैं |”

“ऋषि जमदग्नि मुस्कुरा दिया | उद्देश्य बहुत जल्द उजागर होने वाला था |

“जब वे आश्रम पहुंचे , आश्रम के बाहर घुड़सवार सैनिकों का एक दल खड़ा था | ऋषि जमदग्नि उनसे बोले – “हे सैनिको, ऐसा लगता है कि आपको किसी चीज की जरुरत है | बताओ , क्या इच्छा रखते हो ?”

“सैनिक दल प्रमुख घोड़े से उतरा और ऋषि तथा देवी को प्रणाम किया | अन्य सैनिकों ने भी सम्मानपूर्वक अपना सिर झुका लिया | दल प्रमुख बहुत ही मंद आवाज में बोला – “खाना , ज्ञानी जी|”

"ऋषि जमदग्नि ने उन्हें बेर देने चाहे किन्तु सैनिक बोला - "महर्षि , हम पिछले कई दिनों से फल खाकर गुजारा कर रहे हैं | हमने इतने बेर खा लिए हैं कि अब तो बेरो के देखने से भी उलटी आती है | हमें अपने उदर को शांत करने के लिए कुछ पके हुए भोजन की इच्छा है |"

"ऋषि जमदग्नि ने उत्तर दिया – "कृपा इन बेरों को पकड़ो | मैं अन्दर जाकर आप सबके लिए कुछ खाना लाता हूँ |"

"ऋषि और उनकी पत्नी आश्रम के अन्दर गए और ऋषि इंद्र देव से बोले – "हे इंद्र देव, मेरी इच्छा है मेरे आश्रम के बाहर जितने भी सैनिक खड़े हैं , उन सबकी भूख शांत हो |"

"जब वे आश्रम से बाहर आये तो उन्होंने देखा कि सैनिक मजे से बेर खा रहे थे | देवी रेणुका ने दल प्रमुख से जिज्ञासापूर्वक पूछा – "हे सैनिक, कुछ देर पहले तो आप कह रहे थे कि बेर देखने से भी आपको उलटी आती है क्योंकि पिछले कुछ दिनों में आपने बहुत ज्यादा बेर खा लिए हैं | लेकिन अब आप बेरो को बड़े मजे से खा रहे हो?"

"सैनिक देवी रेणुका के शब्दों सुनकर आश्चर्य में था | ऋषि और देवी को प्रणाम करते हुए बोला – "देवी , मैं आपको पहली बार देख रहा हूँ | तो आप ऐसा क्यों दर्शाना चाहती हैं कि कुछ देर पहले हम मिल चुके हैं और बाते कर चुके हैं?"

"देवी रेणुका ने ऋषि जमदग्नि की ओर एक नजर देखा और सैनिक से बोली – "आपने पके हुए भोजन की इच्छा जाहिर की थी और हम आश्रम से भोजन लाने गए थे | जो बेर आप खा रहे हैं वे हमने इकट्ठे किये हैं | हमने ही कुछ देर पहले आपको ये बेर दिए |"

"सैनिक ने उत्तर दिया – "देवी, हमने न तो भोजन की इच्छा प्रकट की, न इससे पहले हम आपसे मिले हैं | हम आप ज्ञानियों के दर्शन मात्र के लिए रुके थे | मैं बहुत ही साधारण मनुष्य हूँ | मेरे पास उतना ज्ञान नहीं है कि मैं आप ऋषियों के साथ रहस्यमय वार्तालाप में सम्मिलित हो सकूँ | अगर हमने कुछ गलत किया है तो हमें क्षमा कर दीजिये | अब जबकि हमने आपके दर्शन प्राप्त करके आशीर्वाद प्राप्त कर लिया है , कृपा हमें अपनी यात्रा पुनः आरम्भ करने की आज्ञा दें |"

"हे मातंगो , क्या आप समझे वहां पर क्या हुआ? परम परिवर्तन | सैनिकों की भूख इंद्र देव ने शांत कर दी थी और उसके साथ ही उन्होंने उनकी यह याद भी मिटा दी थी कि वे भूखे थे | जब सैनिक वहां से चले गए , देवी रेणुका ने ऋषि से पुछा – "स्वामी , इस गुप्तता का क्या लाभ? उन्हें खाना हमारे आश्रम की सतयुग-जैसी शक्ति की वजह से मिला | निषादों और पृथु वर्ग के लोगो को यह पता होना चाहिए कि ऋषियों के स्थान कोई साधारण स्थल नहीं हैं | जब उन्हें ऋषियों की चमत्कारी शक्ति का पता चलेगा तो उन्हें यह प्रोत्साहन मिलेगा कि वे भी अपने स्तर से ऊपर उठकर ऋषि बने |"

"ऋषि जमदग्नि बोले , "देवी , हम यह रहस्य केवल उन पृथु और निषादों को पता चलने देते हैं जो ऋषि बनने के लायक हों | हम इस रहस्य को हर किसी को उजागर नहीं कर सकते | अन्यथा जैसे सतयुग में सबसे रूपवान देह को हासिल करने के लिए लड़ाई हुई थी और उस लड़ाई में वह देह मर गई थी , वैसे ही आश्रमों को हथियाने के लिए लड़ाई छीड़ जायेगी और आश्रम समाप्त हो जायेंगे | संसार का विनाश हो जाएगा |"

"अगली सुबह ऋषि जमदग्नि अपनी पत्नी को परम ज्ञान का अगला अध्याय प्रदान करने के लिए एक रहस्यमय स्थान पर ले गए | उस स्थान पर एक नदी बह रही थी और पानी इतना शुद्ध था कि उसमे से अमृत की महक आ रही थी | नदी के किनारे पर कुछ पके हुए घड़े , कुछ कच्चे घड़े , कुम्हारों के औजार और विभिन्न प्रकार की मिटटी बिखरी पड़ी थी | ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई कुम्हार का स्थान हो , लेकिन वहां पर कुम्हार नहीं था |

"इससे पहले कि देवी रेणुका उस स्थान के बारे में कुछ पूछती , उसने कुछ बहुत ही रूपवान पुरुषों को जल में क्रीडा करते हुए देखा | ऋषि बोले – "वे गन्धर्व हैं | यह स्थान देव इंद्र ने इसलिए बनाया है कि आप परम ज्ञान के मार्ग पर अपनी प्रगति को माप सको |"

“देवी रेणुका ने गन्धर्वों से नजरें हटाकर मिटटी के घड़ों को देखना प्रारंभ कर दिया | उसने पुछा – “स्वामी ,कृपा इस स्थान के रहस्य का वर्णन कीजिये | मैं जानने को उत्सुक हूँ |”

“ऋषि जमदग्नि ने उत्तर दिया – “देवी, यह जल मानव इच्छाओं का प्रतीक है और ये घड़े वे पात्र हैं जो उन इच्छाओं को थामते हैं | इच्छाओं को थामना आवश्यक है अन्यथा एक इच्छा दूसरी इच्छा को जन्म देती चली जाती है और भ्रम बढ़ता जाता है | संस्कार वह पात्र है जो इच्छाओं को थामता है | उदाहरण के तौर पर, जब आपने इन रूपवान गन्धर्वो को देखा, आपके अन्दर से एक इच्छा उभरनी शुरू हुई | लेकिन आपके संस्कारों ने उस इच्छा को तुरंत रोक दिया | आपके संस्कार आपसे बोले – ‘मैं अपने पति जमदग्नि के प्रति समर्पित हूँ | किसी अन्य पुरुष से आकर्षित होने का विचार भी मेरे मन में नहीं आ सकता , फिर चाहे वह पुरुष गन्धर्व ही क्यों न हो |’ बताओ देवी , आपके पास यह संस्कार कहाँ से आया?”

“देवी रेणुका ने उत्तर दिया – “स्वामी , मैं एक राजकुमारी हूँ और मेरे अन्दर संस्कार मेरे बड़े-बुजुर्गों तथा समाज के ज्ञानियों ने डाले हैं |”

“”और आपके बड़े बुजुर्गों और समाज के ज्ञानियों के पास वे संस्कार कहाँ से आये?” ऋषि जमदग्नि ने पुछा | इससे पहले कि देवी रेणुका उत्तर देती , उन्होंने वर्णन किया – “ये संस्कार असल में ऋषियों द्वारा प्रदान किये गए हैं | हम ऋषियों की जिम्मेदारी है समाज की रक्षा करना | हमने पृथु लोगो के लिए सही-गलत के नियम बनाये हैं जो उनमे पीढ़ी दर पीढ़ी प्रसारित होते जाते हैं | जैसे घड़ा पानी को थामे रखता है , संस्कार इच्छाओं को थामे रखते हैं |”

“देवी रेणुका ने पुछा – “स्वामी , यहाँ पर कुछ पके हुए घड़े हैं और कुछ बिना पके | इस सबका क्या अर्थ है?”

“ऋषि जमदग्नि ने उत्तर दिया – “देवी , अगर कोई मनुष्य संस्कार पृथु है , उसे यह तो पता होता है कि क्या गलत है और क्या सही , किन्तु उसे यह पता नहीं होता कि कोई भी चीज सही या गलत “क्यों” है | उदाहरण के तौर पर , ऐसा मनुष्य जानवरों के प्रति दयावान होगा लेकिन अगर आप उससे पूछो कि जानवरों के प्रति दयावान क्यों होना चाहिए तो वह उत्तर देगा – ‘क्योंकि , ज्ञानी लोगो का कहना है कि यह अच्छा कर्म है ‘| ऐसा मनुष्य ऋषियों द्वारा निर्धारित बने बनाये नियमो का पालन करता है | अगर कोई मनुष्य यहाँ से बना बनाया पका हुआ घड़ा उठाकर इस नदी से पानी भर लेता है तो सिद्ध हो जाता है कि वह मनुष्य कम से कम संस्कार पृथु है |”

“देवी रेणुका ने वहां से एक बना बनाया घड़ा उठाया और नदी से पानी भरने लगी | उसका ध्यान बांटने के लिए वहां पर गन्धर्व दिखाई दिए लेकिन उसका ध्यान नहीं बंटा और उसने आसानी से वह घड़ा भर लिया | इससे सिद्ध हो गया कि वह कम से कम संस्कार के स्तर तक जागृत थी अर्थात वह कम से कम संस्कार पृथु थी |

“उसने पुछा – “स्वामी , मुझे यह सिद्ध करने के लिए क्या करना पड़ेगा कि मैं चित्त पृथु अर्थात चित्त के स्तर तक जागृत हूँ?”

“उन्होंने उत्तर दिया – “देवी , चित्त पृथु भी बने बनाए सही-गलत के नियमों का पालन करते हैं | वे जानते हैं कि क्या गलत है और क्या सही और वे यह भी जानते हैं कि कुछ गलत-सही है तो क्यों है | अगर आप यहाँ से एक बना बनाया घड़ा उठाकर , गन्धर्वो और यक्षों दोनों से बिना विचलित हुए , पानी भर लो तो सिद्ध हो जाएगा कि आप चित्त पृथु हो |”

“जब उसने दूसरा बना बनाया घड़ा उठाकर पानी भरना शुरू किया तो गन्धर्वो के साथ यक्षों ने भी वहां प्रकट होकर उसे विचलित करने की कोशिश की | यक्षों के कारण उसके मन में बहुत सारे प्रश्न घूमने लगे | लेकिन उसने अपने मन को शांत कर लिया और सफलतापूर्वक वह घड़ा भर लिया | उसने सिद्ध कर दिया कि वह कम से कम चित्त पृथु थी |

“उसने आगे पुछा – “स्वामी , मुझे यह सिद्ध करने के लिए क्या करना पड़ेगा कि मैं आत्म-पृथु अर्थात आत्मा के स्तर तक जागृत हूँ?”

“उन्होंने उत्तर दिया – “देवी , आत्म पृथु श्रेणी के लोग बने बनाये नियमों का पालन नहीं करते | क्योंकि कई परिस्थितियों में बने बनाये नियम काम नहीं करते | आत्म पृथु परिस्थिति के अनुसार नियम स्वयं बना सकते हैं | किसी परिस्थिति के सन्दर्भ में क्या सही है और क्या गलत, और क्यों, उसका आंकलन वे अपने ज्ञान का प्रयोग करके कर सकते हैं | यहाँ पर पड़े कुम्भकार औजारों का प्रयोग करके अगर आप घड़ा बना लो और फिर उसमे पानी भर सको , तो आप आत्म पृथु हो |”

“वह कुम्भकार औजारों की और बढ़ी लेकिन उन्होंने उसे रोक दिया | वे बोले – “देवी , आप अभी आत्म पृथु नहीं हो | जब आप आत्म पृथु बन जाओगी तो मैं आपको बता दूंगा | तब आप यहाँ आकर यह सिद्ध कर सकोगी कि आप आत्म पृथु हो|”

“उसने आगे पूछा – “स्वामी , कृपा यह बताइए कि ऋषि यह कैसे सिद्ध करते हैं कि वे ऋषि हैं?”

“ऋषि जमदग्नि वहां पर पड़े एक कुम्भकार चक्र की और बढे | उन्होंने वहां पर पड़ी मिटटी से एक कच्चा घड़ा बनाया | जैसे ही वे उस कच्चे घड़े को उठाने को हुए, 3 अप्सराओं ने अपने कोमल हाथों से वह घड़ा पकड़ लिया | अप्सराओं ने उस घड़े को पानी से भर लिया और उसे आश्रम की ओर ले जाने लगी | ऋषि जमदग्नि केवल अपनी उँगलियों के अग्रभाग से घड़े के मुख को छुए हुए थे | बाकी सारा काम अप्सराएँ कर रही थी | अप्सराओं ने आश्रम तक उस घड़े को ले जाने में सहायता की |

“जब वे आश्रम पहुंची , ऋषि जमदग्नि ने अपनी पत्नी को कहा , “देवी, ऋषि यहाँ पर देवो के उद्देश्य अर्थात संसार के कल्याण के लिए हैं | उनके लिए कोई विचलन नहीं है | सभी शक्तियां – अप्सराएं , गन्धर्व, यक्ष आदि – ऋषियों की उनके कार्यों में सहायता करती हैं | जब आप ऋषि बन जाओगी , गन्धर्व आपका ध्यान नहीं बंटाएंगे | वे आपकी सहायता करेंगे और आप कच्चे घड़े में पानी ला सकेंगी |”

“हे मातंगो , बहुत जल्द देवी रेणुका का उत्थान हुआ और पहले वे आत्म पृथु बनी और फिर ऋषि बन गई | जब वे पहली बार कच्चे घड़े में पानी लाई , ऋषि जमदग्नि उनसे बोले – “देवी , जब मैंने आपसे विवाह किया, आप संस्कार पृथु थी | अब आपकी पृथु से ऋषि की यात्रा पूर्ण हुई | अब आप ऋषि हो | आपको यह कार्य (कच्चे घड़े में पानी लाना) निरंतर करना चाहिए , यह पता करने के लिए कि कही आप ऋषि के स्तर से पृथु के स्तर पर तो नहीं फिसल गई हैं |”

“कई वर्ष बीत गए | देवी रेणुका कच्चे घड़े में पानी लाने का अनुष्ठान निरंतर किया करती थी | इस बीच, भगवन विष्णु ने परशुराम अवतार में धरा पर आने के लिए उनको अपनी माता के रूप में चुन लिया था |

“एक दिन वे कच्चे घड़े में पानी लाने का अनुष्ठान करने गई | जब वे वापिस आ रही थी तो ऋषि जमदग्नि ने देखा कि वो घड़ा नहीं ला रही थी , कच्चा तो क्या पका घड़ा भी नहीं ला रही थी | इसका एक ही अर्थ हो सकता था कि वे निषाद के स्तर पर फिसल गई थी , क्योंकि पृथु कम से कम पका घड़ा तो ला ही सकते हैं |

“ऋषि जमदग्नि भौचक्के थे | उन्होंने सोचा – ‘मैं यह नहीं मान सकता | एक ऋषि निषाद के स्तर पर कैसे गिर सकता है? मेरा वर्षो का गुरु-परिश्रम ऐसे व्यर्थ कैसे हो सकता है? मैं कैसा गुरु हूँ कि मेरी सबसे करीबी शिष्या , मेरी पत्नी , निषाद के स्तर पर गिर गई?’

“जब देवी रेणुका नजदीक आई तो ऋषि जमदग्नि ने देखा कि उनके चारों और देवत्व का प्रभामंडल था | उनकी निराशा सुखद आश्चर्य में बदल गई |

"देवी रेणुका ने अपने दायें और देखा तो वह नदी उस तरफ प्रकट हो गई जिसके किनारे पर घड़े पड़े थे और पानी में गन्धर्व क्रीडा कर रहे थे | देवी ने बायीं ओर देखा तो वह नदी बाई ओर प्रकट हो गई | उन्होंने देवत्व धारण कर लिया था | अब उनके पास एक दृष्टि भर से वह नदी प्रकट करने की शक्ति थी | अब वह देवो की सहायक नहीं अपितु खुद देवी बन गई थी |

"ऋषि जमदग्नि ने घुटने जमीन पर टिकाकर अपना सिर सम्मान से झुका लिया | भगवन विष्णु वहां परशुराम रूप में उपस्थित थे | ब्रह्मा और शिव प्रभु भी अपने अपने लोकों से इस क्षण के साक्षी बने | संसारी देवो के प्रमुख इंद्रदेव अन्य देवी-देवताओं के साथ वहां प्रकट हुए | ऋषि जमदग्नि हाथ जोड़कर बोले – "देवी , अब जबकि आपने देवत्व धारण कर लिया है , आपको अपनी एक मूरत चुननी चाहिए जिसकी उपासना करके आपके भक्त आपका आशीर्वाद प्राप्त कर सकें |"

"देवी रेणुका बोली – "हे ऋषि श्रेष्ट जमदग्नि , मैं निषाद और पृथु दोनों की देवी बनना चुनती हूँ | बिलकुल नीचे के स्तर के निषाद और पृथु भी मुझसे आसानी से जुड़ जाने चाहिए | मेरी उपासना करके उन्हें यह ज्ञान हो जाना चाहिए कि वे न केवल ऋषि स्तर बल्कि एक कदम ऊपर देवत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं |"

"देवी रेणुका को देवी के रूप में दीक्षित करने के लिए स्वयं भगवन विष्णु , जो वहां रेणुका पुत्र परशुराम के रूप में उपस्थित थे, आगे आये | उन्होंने अपनी कुल्हाड़ी से देवी के सिर को धड से अलग कर दिया | जो सिर धरती पर गिरा वह एक राजकुमारी का सिर था (क्योंकि रेणुका एक राजकुमारी थी) | जो नया सर उनकी धड पर प्रकट हुआ , वह एक निषाद महिला का सिर प्रतीत हो रहा था | प्रभु विष्णु ने घोषणा की – "पृथु वर्ग के लोग देवी रेणुका के पृथु रूप (जो सर नीचे गिरा वह) और निषाद उनके निषाद रूप की उपासना करेंगे |"

"हे मातंगो , इस तरह देवी रेणुका पृथु और निषाद दोनों की देवी बन गई |" हनुमान जी ने विराम दिया |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अद्दश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अद्दश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन द्दश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने द्दश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

No successful Arpanam attempt from you on this chapter so far.

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print